Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.831
Volume - 7, Issue - 02 February - 2024

DOIs:10.2018/SS/202402013 --:-- Research Paper / Article / Review

वैश्वीकरण, शिक्षक एवं शिक्षा

संतोष कुमार
सहायक प्राध्यापक, पटेल बी0 एड0 कॉलेज, लोधमा, खूँटी, झारखण्ड
Email - jaysriseet14@gmail.com

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक बार कहा था- "मैं नहीं चाहता कि मेरा घर सब तरफ खड़ी हुई दीवार से गिरा रहे और उसके दरवाजे और खिड़कियां बंद कर दी जाए। मैं तो यही चाहता हूं कि मेरे घर के आस-पास देश--विदेश की संस्कृतियों की हवा बहती रहे।"

महात्मा गांधी की यह उक्ति वैश्वीकरण की अवधारणा का सार प्रस्तुत करती है। वैश्वीकरण शब्द विश्व शब्द से बना है। जिससे जिससे यह अर्थ निकलता है कि यह एक व्यापक अवधारणा है। वैश्वीकरण की यह अवधारणा जिसका अर्थ है कि किसी भी विषय, घटना, समस्या या सिद्धांत को संपूर्ण विश्व के संदर्भ में देखा जाए नई-नहीं है। भारत में पुरातन काल से ही "वसुदेव कुटुंबकम" का भाव स्वीकार किया गया है। पर आधुनिक युग में वैश्वीकरण शब्द की अवधारणा एक नए रूप में सामने आई है। वर्तमान युग संचार व प्रौद्योगिकी का युग है। जहां पर वैश्वीकरण अपनी पूरी सक्रियता के साथ पूरे विश्व में विस्तारित होता जा रहा है और इसी वैश्वीकरण के कारण आज पूरा विश्व एक छोटी सी दुनिया में सिमट गया है वैश्वीकरण के कारण हम एक दूसरे के नजदीक आ गए हैं।

वैश्वीकरण के युग में शिक्षक की भूमिका

आज से लगभग ढाई दशक पूर्व विद्यार्थियों के ज्ञान पिपासा का जागृत करने व शांत करने का मुख्य आधार शिक्षक था। उसे समय विद्यार्थी अक्षरीय एवं पुस्तकीय ज्ञान के लिए शिक्षक पर निर्भर होते थे। तत्कालीन समय में बहुत कम विद्यार्थियों के पास टीवी रेडियो समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं उपलब्ध हो पाती थी। विद्यार्थी के पास कल्पनाएं जिज्ञासाएं व प्रश्नों की भरमार होती थी। लेकिन उसके पास समाधान का एकमात्र स्रोत शिक्षक था। जो अपने अनुभवों के आधार पर उनकी जिज्ञासा को शांत करता था। लेकिन आज शिक्षक की भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन आ गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में शिक्षक की बदलती भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा गया है-"उसे अब तक ज्ञान के स्रोत के रूप में केंद्रीय स्थान मिलता रहा है। वह सीखने सिखाने की समूची प्रक्रिया का संरक्षक और प्रबंधक रहा है और पाठ्यचर्या या अन्य विभागीय आदेशों के जरिए सुपुर्द शैक्षणिक और प्रशासनिक जिम्मेदारियां को पूरा करने वाला रहा है। अब उसकी भूमिका ज्ञान के स्रोत के बदले एक सहायक की होगी जो सूचना को ज्ञान या बोध में बदलने की प्रक्रिया में विविध उपायों से शिक्षार्थियों को उनके शैक्षणिक लक्ष्यों की पूर्ति में मदद करें ।"

शिक्षा के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग ने शिक्षा की परंपरागत प्रणाली में अत्यधिक परिवर्तन ला दिया है। आज शिक्षा में सूचना संप्रेषण तकनीकी के सशक्त माध्यमों जैसे-रेडियो, दूरदर्शन, टेप रिकॉर्डर, वीडियो रिकॉर्डर, टेलीफोन, मोबाइल, कंप्यूटर, सीडी रोम, उपग्रह संप्रेषण, ईमेल, इंटरनेट आदि का सीखने की प्रक्रिया में सफलता पूर्वक

प्रयोग किया जा रहा है। उच्च शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग ने शिक्षा की परंपरागत प्रणाली में अत्यधिक परिवर्तन ला दिया है। यह शिक्षक के सर्वाधिक मददगार के रूप में उभरी है। सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षक को अपने ज्ञान को अध्यतन बनाए रखने में पाठ योजना तैयार करने में, विद्यार्थियों के विभिन्न अभिलेख बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। आज शिक्षक पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से मल्टीमीडिया का प्रयोग कक्षा शिक्षण में विषय वस्तु को रुचिकर, सहज एवं सुग्राहय बनाने में कर रहा है। इसके अतिरिक्त विद्वान शिक्षकों के व्याख्यानों को इंटरनेट के द्वारा छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। जिसे सुदूर क्षेत्रों में अध्यनरत छात्र भी विषय विशेषज्ञों के ज्ञान से परिचित हो जाता हैं।

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में उच्च शिक्षा की विषय वस्तु अध्यापन आवश्यकताऐं तथा अध्यापकीय दृष्टिकोण सभी बदल गए हैं। इसलिए उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी अत्यधिक परिवर्तन दृष्टिगत हो रहा है। आज मानविकी विषयों के स्थान पर विविध आयामी व्यवसायिक पाठ्यक्रमों पर बल दिया जा रहा है। इसलिए उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण एवं बचाव, जनसंख्या शिक्षा, रोग मुक्ति व रोग नियंत्रण के उपाय, सकारात्मक मूल्यों का विकास, कौशल विकास, मानवाधिकार, शांति शिक्षा, कंप्यूटर से लेकर अंतरिक्ष विज्ञान तक, समुद्र के गर्भ से लेकर वास्तुशास्त्र, खनिजशास्त्र तक आदि नवीन विषयों का समावेश किया जा रहा है। पाठ्यक्रमों में आए इस परिवर्तन को विद्यालय में प्रभावकारी ढंग से लागू करना शिक्षकों के लिए एक बड़ी चुनौती है। जिसके लिए उन्हें अपनी दक्षता में वृद्धि करनी होगी और इसके लिए उन्हें सशक्त बनना होगा ।

आज विश्व एक गांव का रूप ले रहा है। संस्कृतियों में तेजी से संक्रमण हो रहा है। ऐसे में शिक्षक की अपनी भूमिका और भी अधिक संवेदनशील हो जाती है। शिक्षक का कार्य वास्तव में अन्य कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण और चुनौती भरा है। क्योंकि उसे भावी नागरिकों का निर्माण करना है। उस पीढ़ी का निर्माण करना है। जो संस्कृति की संवाहक होगी। आज शिक्षक को पारंपरिक शिक्षण के स्थान पर नवाचार की ओर उन्मुख होना पड़ेगा। सूचना प्रौद्योगिकी व नवीन शिक्षण तकनीकों की जानकारी प्राप्त करने के साथ ही शिक्षक को मूल्यों का संरक्षण करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करना होगा। ऐसे दक्ष व नवाचारी शिक्षक के द्वारा ही उच्च शिक्षा की वैश्विक चुनौतियों का सामना कर पाना संभव हो सकेगा। यदि शिक्षकों को उचित संसाधन नवाचारों व उपयुक्त प्रशिक्षण के द्वारा सशक्त कर दिया जाए । तो निसंदेह भारत के विश्वविद्यालय विश्व की रैंकिंग में उच्च स्थान प्राप्त कर सकेंगे और उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को विदेश जाने की जरूरत नहीं होगी वर्न विदेशी छात्र भारत में अध्ययन करने के लिए आएंगे। जिससे भारत आर्थिक रूप से समृद्ध हो सकेगा एवं नालंदा के समय की तरह भारत एक बार पुनः विश्व गुरु बनकर विश्व को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करेगा।

वैश्वीकरण की चपेट में हमारे शिक्षा प्रणाली

सबसे अहम भूमिका शिक्षक की मानी जानी चाहिए वह है देश के सुयोग्य, देश के सुयोग्य देशवासियों के निर्माण की भूमिका। पर हमारे नीति निर्माताओं के कर्मों व कदमों से यह बात सिर्फ दिखावटी व लिखित आदर्शो में ही बची है। शिक्षकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने आप को उन पुराने आदर्श के साथ बचाने की है। वैश्वीकरण की चपेट में सबसे ज्यादा शिक्षक व शिक्षा प्रणाली ही आए हैं ।

पिछले 15 वर्षों से विकास की इस अधूरी चाल से विश्व बैंक के कहने से ही हर क्षेत्र की नीतियों का निर्माण किया जा रहा है। इसकी जड़ में हमारी शैक्षिक संस्थान भी आ चुके हैं। स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षक का कैडर विलुप्त प्राय होता दिख रहा है। शिक्षकों की जगह ऐसे अप्रशिक्षित लोग ले रहे हैं। जो ना तो मानक योग्यता रखते हैं और ना ही शिक्षण कार्य में उनकी रुचि या स्थायित्व है। शिक्षक जिसे गुरु कहा जाता था, अब कहीं शिक्षा-मित्र, तो कहीं पारा, तो कहीं कॉन्ट्रैक्ट पर काम चलाऊ पदनाम धारी आ रहे हैं। शिक्षक संगठनों ने अपनी कमियों के चलते शुरुआत में किए गए विरोध को भी बंद कर दिया है। जाहिर है कि वैश्वीकरण की इस आंधी में आज सबसे बड़ी जरूरत शिक्षक नाम के कैडर

को बचाने की है। पर वैश्वीकरण के पूरोधाओं के उच्च पदों पर बैठे होने के चलते यह होता दिखे यह इतना आसान नहीं लगता है।

दूसरी चुनौती अपनी शिक्षा प्रणाली को बचाने की है। आर्थिक उदारवाद के इस दौर में आज देशभर में शिक्षा के दुकान खुल गई है। केंद्र और राज्य सरकारों की नीतियां सरकारी स्कूलों को तिरष्कृत कर निजी स्कूलों को बढ़ावा देने की है। निजी स्कूलों को दिए जा रहे बढ़वो और महिमा मंडल से शिक्षा आम आदमी से दूर होती दिख रही है। सरकार निजी स्कूलों को बढ़ावा तो देती है लेकिन सरकारी स्कूलों को सुधारने या निजी स्कूलों की तर्ज पर विकसित कर जनता को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने में असफल रही है। हमारे परंपरागत शैक्षिक प्रणाली ध्वस्त हो रही है। आगे की पीढ़ियां अच्छे कर्मी तो हो सकते हैं। लेकिन सुयोग्य नागरिक बने इसमें संदेह है।

तीसरी प्रमुख चुनौती है कि शिक्षा कैसी हो, यह तय करने वाले शिक्षाविद नहीं बल्कि व्यूरोक्रेट्स और कॉर्पोरेट घराने के मुखिया है। सरकार उनकी गोद में बैठकर शिक्षा के क्षेत्र में बाजारीकरण को बढ़ावा देने के लिए पब्लिक-प्राइवेट-पार्टनरशिप का राग अलाप रही है। जबकि असल निशाना उन कॉरपोरेट घरानों को लाभ पहुंचाने व शिक्षा के क्षेत्र से अपना पीछा छुड़ाने का ही है। दरअसल 3च् के जरिये शिक्षा के सरकारी संसाधनों को पब्लिक-प्राइवेट लूट को ही आधिकारिक बनाने की कोशिश की जा रही है।

जाहिर है इस मुहिम में सभी को जागरूक करना होगा नहीं तो कहीं देर ना हो जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. एम. एच. आर डी. (1986-1992), नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन, नई दिल्ली, भारतीय शिक्षा के माध्यम से सामान्य एकता अंतराष्ट्रीय सम्मेलन शान्ति समरसता उदयपुर 26-27 मार्च 2011.
2. व्रेमेल्ड थियोडोर (1975) शिक्षा की दार्शनिक प्रजातियाँ संास्कृति परिपेक्ष्य - राजस्थान, जयपुर.
3. वैश्वीकाण और शिक्षा की चुनौतियाँ- अमर उजाला दैनिक समाचार पत्र दिनांक 21 जनवरी 2016 सम्पादकीय पृष्ठ सं- 7
4. विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक (प्रो0 रमन बिहारी लाल) पृष्ठ सं0- 379
5. ज्ञान एंव पाठ्यक्रम (वैश्वीकरण एंव शिक्षा) (डॉ0 अजीत कुमार पाण्डेय) पृष्ठ सं- 288